ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

ए॰ए॰ अल्मेलकर का कला संसार
The Art world of A.A. Almelker

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 14/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

नमिता त्यागी
सहायक प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीयूट,
दयालबाग, आगरा, भारत

सारांश

अब्दुल रहीम अप्पाभाई अल्मेलकरचित्रकारी के परम्परागत शैली के पोषक थे। दृश्य चित्रण के पश्चात्, ग्रामीण एवं लोक जीवन, भारतीय शैली के स्त्री पुरुष व काल्पनिक विषयों जैसे राजा–रानी, नायक–नायिका, ऐतिहासिक चित्र जिनमें मुगल, राजपूत, पहाड़ी शैली से प्रभावित चित्र, इसके अतिरिक्त आदिवासी मछुआरे, अनुसूचित जाति के लोगों के चित्र यह वह जीवन भर बनाते रहे।आप आदिवासी जीवन के हल्के–फुल्के क्षणों तथा आनन्दमय पलों को चित्रित करने के पक्षधर रहे, ग्राम्य जीवन के साथ प्राकृतिक सुन्दरता को आपने अपने चित्रों में अप्रतिम रूप प्रदान किया।

श्री आल्मेलकर ने जल रंग, तैल रंग दोनों में ही कार्य किया, साथ ही साथ टेम्परा, ग्वाश एवं मिश्रित माध्यम का प्रयोग करके आपने अपनी सृजनशील रचनात्मकता का परिचय दिया। विषयानुरूप रंगों के चयन में आप सिद्धहस्त थे, रंगों की आलोकित आभा आपके प्रत्येक चित्र को एक नूतन रूप प्रदान करती थी। कला के ये दो तत्त्व रंग एवं रेखा का वर्चस्व आपकी कृतियों में सदैव देखने को मिलता है। मलेशिया, सिंगापुर इण्डोनेशिया सीलोन, जावा एवं कम्बोडिया जैसे विभिन्न एशियाई देशों की यात्राओं ने आपके कला जीवन को प्रभावित अवश्य किया किन्तु आपकी कला जड़ें सदैव भारतीयता से जुड़ी रही।सन् 1955 के आसपास आल्मेलकर ने अपनी एक नयी रचनात्मक शैली विकसित की जो अपने आकारों, संरचना एवं रंग योजना में मध्यकालीन लघु चित्रण शैली को आत्मसात् करती थी। सन् 1968 में वह सर जे0जे0 स्कूल ऑफ आर्टस, बम्बई में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हुए। अनुभवपूर्ण कला सेवा तथा अपूर्व सृजन के सामर्थ्य के साथ आप निरन्तर विद्यार्थियों को अपने मौलिक स्वरूप को विकसित करने की प्रेरणा देते रहे।श्री आल्मेलकर अपनी कृतियों के माध्यम से सदैव भारतीयता से जुड़े रहे, उस समय जब एक ओर कला प्रोगेसिव आर्टिस ग्रुप के कलाकारों के अभिनव प्रयोगों की देख रही थी वहीं एक ओर कलाकारों का वह वर्ग भी था जो परम्परावादी कार्यशैली को अपनी सृजनशीलता से आलोकित कर रहा था श्री आल्मेलकर उन्हीं में से एक थे।

Abdul Rahim Appabhai Almelkar was a patron of the traditional style of painting. After the visual depiction, rural and folk life, Indian style of men and women and fictional subjects like king-queen, hero-heroine, historical paintings in which pictures influenced by Mughal, Rajput, Pahari style, besides tribal fishermen, scheduled caste people. He continued to paint this picture throughout his life. You were in favor of painting the light moments and joyful moments of tribal life, you gave an unparalleled form to the natural beauty of rural life in your paintings.

मुख्य शब्द : परम्परागत शैली, रचनात्मक, जल रंग, तैल रंग, टेम्परा, ग्वाश, मिश्रित माध्यम।
Traditional Style, Creative, Watercolor, Oil Color, Tempera, Gouche, Mixed Medium.

प्रस्तावना

अब्दुल रहीम अप्पाभाई अल्मेलकर उन कलाकारों में अग्रणी थे जिन्होंने अपनी कला साधना को एक बड़े लक्ष्य में लगा दिया था। आपने अपना कला जीवन एक दृश्य चित्रकार के रूप में प्रारम्भ किया और तत्पश्चात कला साधना में तत्पर अपने कलाकर्म को लोक जीवन के संघर्षपूण, शान्त एवं मनोरम वातावरण की ओर प्रेरित किया एवं नवीन रचनात्मक कलाकर्म से कला की ऊँचाईयां को स्पर्श किया। श्री आल्मेलकर भारतीय चित्रकारी के परम्परागत शैली के पोषक थे। दृश्य चित्रण के पश्चात्, ग्रामीण एवं लोक जीवन, भारतीय शैली

के स्त्री पुरुष व काल्पनिक विषयों जैसे राजा–रानी, नायक–नायिका, ऐतिहासिक चित्र जिनमें मुगल, राजपूत, पहाड़ी शैली से प्रभावित चित्र, इसके अतिरिक्त आदिवासी मछुआरे, अनुसूचित जाति के लोगों के चित्र यह वह जीवन भर बनाते रहे।

अध्ययन का उददेश्य

अब्दुल रहीम अप्पाभाई अल्मेलकर के कलात्मक जीवन के प्रत्येक पक्ष की सूक्षमता से पाठक को अवगत कराना, उनके कलाकार्यों की नवीन सृजनात्मकता किस प्रकार अनुशीलन करने योग्य है इस तथ्य से पाठकों कोअवगत कराना। कला के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है अपनी लोक रंजित अभिव्यक्तियों से वह भारतीय परम्परागत कला के पोषक थे, आज के परिवर्तित परिवेश में पराम्परागत मूल्यों से सजी उनकी यह कला अन्य कलाकारों को सदैव आकर्षित करती है, उनकी कलात्मक अभिव्यक्तियों का अध्ययन युवा कलाकारों के लिये प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा।

1920 में अहमदाबाद, गुजरात में जन्में इस कलाकार ने सात साल की छोटी सी आयु में ही अपनी रुचि अनुसार कलाकर्म करना प्रारम्भ कर दिया था। स्थानीय स्कूल से कला में इन्टरमीडिएट करने के पश्चात् अपनी कला अभिलाषा को विस्तार देने के लिये उन्होंने सर जे0जे0 स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई में दाखिला लिया और अपनी मेहनत व कला के प्रति लगन से विद्यार्थी जीवन में ही अनेक कला दर्श स्थापित किये और कला जगत में अपना अस्तित्व कायम किया।

प्रारम्भ में आपने अपनी कला अभिरुचि अनुसार 'एक्सप्रेस ब्लॉक एण्ड एनग्रेविंग स्टूडियों, मुम्बई में एक कमर्शियल आर्टिस्ट के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। कला साधना के प्रति मन में उत्साह रखने वाले आल्मेलकर ने शीघ्र ही विभिन्न कला प्रदर्शनियों में अपनी कलाकृतियाँ भेजना प्रारम्भ किया, जिनमें मुम्बई आर्ट सोसायटी की वार्षिक प्रदर्शनी तथा आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया की प्रदर्शनियाँ महत्वपूर्ण हैं, जहाँ इनके कला कर्म को प्रशंसा मिली व अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

बनारस घाट, अलमेलकर

लोगों से प्राप्त प्रेम और उत्साह ने आलमेलकर के कला जीवन को एक नया मोड़ दिया और वह दुगने उत्साह के साथ अपने कार्य को और विस्तार देते गये। सन् 1940 में उन्हें अपनी उत्कृष्ट जल रंगीय कलाकृति के लिये मुम्बई आर्ट सोसायटी की डायमण्ड जुबली प्रदर्शनी का गवर्नस मेडलप्राप्त हुआ। धीरे–धीरे आपकी ख्याति बढती गयी और अनेकानेक पुरस्कार आपको अपनी कृतियों के लिये मिलते रहे। कुछ ही समय में आपने कला जगत पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

कला साधना करते हुये आपने बैंगलोर स्थित 'नूतन कला मन्दिर' में प्रिंसिपल के पद को सुशोभित किया और अपने अपूर्व कला कौशल को विद्यार्थियों से साझा किया। उन्होंने जो शिक्षा अपने अनुभवों से प्राप्त की थी उसे अपने अध्यापन कार्य में पूरी तरह उपयोग किया। सन् 1968 में वह सर जे0जे0 स्कूल ऑफ आर्टस, बम्बई में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हुए। अनुभवपूर्ण कला सेवा तथा अपूर्व सृजन के सामर्थ्य के साथ आप निरन्तर विद्यार्थियों को अपने मौलिक स्वरूप को विकसित करने की प्रेरणा देते रहे। कला साधना करते हुए इनको परेशानियों का सामना भी करना पड़ा, सन् 1954 में उनका स्टूडियों आग की भेंट चढ़ गया, इससे अल्मेलकर को काफी नुकसान हुआ, किन्तु वह हताश व निराश नही हुए, तब मुम्बई प्रांत के गवर्नर, सर जी0एस0 बाजपेयी ने इनकी अप्रतिम सहायता की, उन्हें रहने के लिये एक घर व मुम्बई में एक स्टूड़ियों भी दिया। अपनी मेहनत व लगन से श्री अल्मेलकर ने पुनः अपने कार्य में ध्यान केन्द्रित किया एवं कार्य साधना मे जुट गये।

जैन मुनिश्रीओं

आपने अपने कला जीवन का प्रारभ एक दृश्य चित्रकार के रूप में किया, जब आपके बनाये चित्रों में वाल्टर लैंघमर एवं बेन्द्रे की कला का प्रभाव दिखाई देता है। प्रारम्भ में आपने जल रंगों का प्रयोग मोटे तौर पर किया है, जिसका उद्देश्य रंगों के प्रभाव को दर्शाना था। चमकदार रंग जब मोटे तौर पर प्रयोग में आते हैं तो

उनमें एक खुशनुमा आकर्षण पैदा होता है उनके चित्र 'विलेज रोड़' एवं 'रामपुर रोड' इस शैली में निर्मित प्रभावशाली चित्र है। इन चित्रों में प्रभाववादियों की तरह रेखाओं का प्रयोग नहीं था, तथा छाया प्रकाश के उत्कृष्ट प्रयोग के साथ संरचना को विकसित रूप दिया गया था। 'बनारस घाट' के अनेकों चित्रों का सृजन आपने अपनी विलक्षण रचनात्मकता के साथ किया जिसमें 'ब्लू बनारस घाट' अविस्मरणीय चित्र है। आपने जल रंगों के साथ पेन एण्ड इंक माध्मम में बड़ी सफलता से चित्रों को बनाया जिनमें ''जैन मुनिश्रीओं,'' 'ओवरी कुण्ड' इनके वह चित्र हैं, जो इस माध्यम में बने इनके उत्कृष्ट चित्रों में से हैं। जल रंगों की सौम्यता के साथ इंक का प्रयोग अत्यन्त मनमोहक बन पड़ा है। 'तीन युवतियॉ', 'मछली', 1956' 'जीवी, 1956, 'राम दरबार' उनके अन्य जल रंगों में बने चित्र हैं, जिनमें जल रंगों को उनके स्वाभाव के अनुसार प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त 'नृत्य' 'संगीतज्ञ', आदि चित्रों में भी जल रंगों का प्रयोग दिखाई देता है, जिसे इन्होंने टेम्परा पद्विति में प्रयुक्त किया है। इन चित्रों में रेखात्मक गति के साथ चित्रों को उभारा गया है। कला के ये दो तत्त्व रंग एवं रेखा का वर्चस्व आपकी कृतियों में सदैव देखने को मिलता है। आपमें रेखाओं की सूक्ष्म पकड़ थी इस विशेषता को हम उनके इन चित्रों में देख सकते हैं। 1955 में मलेशिया तथा इण्डोनेशिया के राजनेताओं ने अपनी भारत यात्रा के दौरान श्री आल्मेलकर की कला कृतियों को खरीदा तथा 1960 में मलायन फेडरेशन आर्ट काउंसिल द्वारा आल्मेलकर को मलेशिया में अपने कार्य की प्रदर्शनी हेतु आमंत्रित किया गया। यह आल्मेलकर जी के लिये पहली बार था, जब वह विदेश यात्रा पर गये। श्री आल्मेलकर ने लगभग चार महीने तक लगातार विदेशों में कई स्थानों पर यात्राएँ की इन यात्राओं से उनके विषय और अधिक विस्तृत हो गये, जब वह भारत आये तो उन्होंने दक्षिण पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित होकर अनेक चित्रों का निर्माण किया, तथा प्रदर्शनी भी लगाई। इनके इन चित्रों को अत्यन्त सराहा गया तथा अधिकतर चित्र बिक गये। मलेशिया, सिंगापुर इण्डोनेशिया सीलोन, जावा एवं कम्बोडिया जैसे विभिन्न एशियाई देशों की यात्राओं ने आपके कला जीवन को प्रभावित अवश्य किया किन्तु आपकी कला जड़ें सदैव भारतीयता से जुड़ी रही।

इस दौरान इन्होंने मछली पकड़ने वाले पुरुष और स्त्रियों को बहुतायात से चित्रित किया, जिनमें वहाँ की संस्कृति, पहनावा, रीति रिवाज आदि को सुन्दर संयोजनों में वयक्त किया है। 'मछली पकड़ने वाली नावें', 'मछली पकड़ते मछुआरे', ''मछली बाजार', 'मछली बेचती स्त्रियाँ', इन सभी विषयों के कलात्मक संयोजन आपकी तूलिका स्पर्शो एवं रंगों के अप्रतिम प्रयोगों से अत्यन्त सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बन पड़े हैं। इन सभी चित्रों में आपकी पैनी दृष्टि की बोधगम्यता का प्रभाव दिखाई देता है।

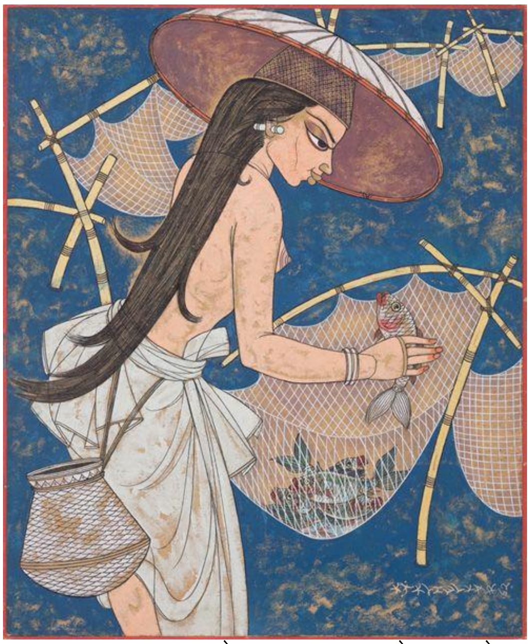

सन् 1955 के आसपास आल्मेलकर ने अपनी एक नयी रचनात्मक शैली विकसित की जो अपने आकारों, संरचना एवं रंग योजना में मध्यकालीन लघु चित्रण शैली को आत्मसात् करती थी। सन् 1960 से 1970 तक उन्होंने इस शैली को अपनी पहचान बनाया और आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की। उनकी कला लोक जीवन से बराबर जुड़ी रही और देश की कला परम्पराओं से भी उन्होंने आधुनिक कला गतिविधियों को ध्यान में रखते हुये अपनी शैली में नवीन सृजनपूर्ण रचनात्मकता के साथ कार्य प्रारम्भ किया, इसके लिये उन्होंने जिन विषय को चुना उनमें ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों को महत्वपूर्ण स्थान दिया, जिसे उन्होंने अपनी शैली में सुन्दर एवं भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया। इनके अतिरिक्त 'राजा–रानी', 'नायक–नायिक', 'राग–रागिनी', 'संगीत', जैसे विषयों को अपनी तूलिका से नये रूपों में विकसित किया। इन चित्रों में उन्होंने लोक–कला तत्त्वों को आधुनिक रूप से प्रस्तुत करने में गजब की तारत्म्यता प्रस्तुत की।

आदिवासी दम्पत्ति, 1979

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

इस शैली में निर्मित इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ–''नाविक'', ''दम्पत्ति'', ''घोड़े'', ''राम–सीता विवाह'', ''तीज त्यौहार'', ''उत्सव'', ''ढ़ोल वादक'', ''राजा का जन्मदिन'', ''राधा कृष्णा'', ''तीन ढोल–वादक'', ''गुजरात के गाँव का दृश्य'', आदि थी, जिनमें आपने अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त की। इन चित्रों में मुख्य आकर्षण का केन्द्र आकृतियों के सुन्दर भावपूरित नेत्र हैं जो दर्शक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मोटी एवं पतली लयपूर्ण रेखाएँ, चटक रंग योजना जिसमें रंगों का तालमेल एक खुशनुमा वातावरण उपस्थित करता है। यह सभी चित्र आपकी कला दक्षता के परिचायक हैं। आदिवासी जीवन की सम्पूर्ण झाँकी हमें श्री आलमेलकर के चित्रों में दिखाई देती है। आदिवासी नर–नारी अपने क्रिया कलापों, रास–रंग और हास विलास के साथ इनकी कला में मुखरित हुये हैं। आदिवासी जीवन की सादगी, आचार–विचार और रीति–रिवाजों को आंकने का प्रयत्न किया है। यह विषय अवश्य ही ग्रामीण है परन्तु अपनी अभिव्यंजना में वह पूर्णतः आधुनिक है, यह आकृतियाँ उनकी निजी शैली व चटख रंगों में ढल कर मन को तन्मय कर देती है। ''आदिवासी दम्पत्ति'', ''फिशरमैन'', ''हाट बाजार'', आदिवासी नृत्य'', ''दो मछुआरे'', ''जाल को सुखाते हुए'', 'द्वीप'' आदि आपकी कृतियाँ आदिवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती है। आप आदिवासी जीवन के हल्के–फुल्के क्षणों तथा आनन्दमय पलों को चित्रित करने के पक्षधर रहे, ग्राम्य जीवन के साथ प्राकृतिक सुन्दरता को आपने अपने चित्रों में अप्रतिम रूप प्रदान किया।

हाट बाजार

श्री आल्मेलकर ने जल रंग, तैल–रंग दोनों में ही कार्य किया, साथ ही साथ टेम्परा, ग्वाश एवं मिश्रित माध्यम का प्रयोग करके आपने अपनी सृजनशील रचनात्मकता का परिचय दिया। विषयानुरूप रंगों के चयन में आप सिद्धहस्त थे, रंगों की आलोकित आभा आपके प्रत्येक चित्र को एक नूतन रूप प्रदान करती थी। रंगों की विलक्षणता हमें उनके प्रत्येक माध्यम में दिखाई देती है।

आदिवासी स्त्रियाँ'

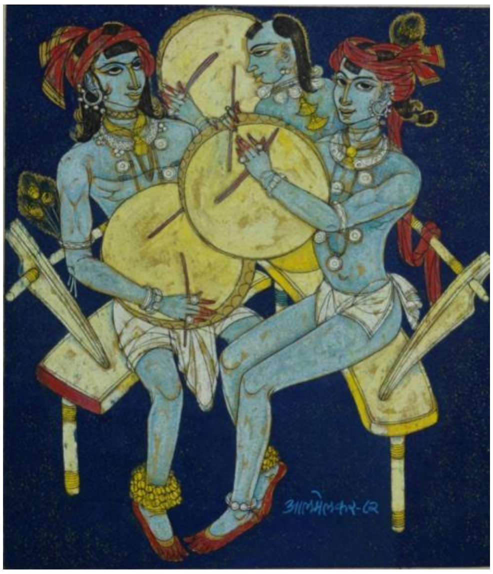

तीनढोल–वादक' 1972

ग्वाश तकनीक में निर्मित उनके चित्र 'बनारस', 'प्लेजर आइसलैंड' 1963, में सफेद रंग के सुन्दर प्रयोग से सम्पूर्ण चित्र आलोकित है, 'फिशर मैन', 1969, 'नेटिव ड्रर्मस', 1960 एवं फिशिंग एण्ड सेलिंग आन दि रिवर, 1957, में भी रंगों का सुनियोजित तालमेल देखते ही बनता है। उनका चित्र ''मूनलिट टेम्पल', 1962 भी उनकी अद्‌भुद रंग क्षमता का परिचायक है जहाँ चन्द्रमा की चाँदनी में नहाया मन्दिर सुन्दरता से खड़ा है। आपने कुछ कार्य मिश्रित माध्यम में भी किया जिसमें 'वुमन विद फिश नेट', 1962, 'मछली पकड़ने वाले', 'बाजार में', 'दो पेड़', इत्यादि आपकी इस तकनीक में बनी अनुपम कृतियाँ हैं।

गतिपूर्ण प्रभावमयी रेखाएँ एवं डिजाइन का आपका कृतियों पर सदैव वर्चस्व रहा। प्रत्येक चित्र उनकी कलापूर्ण रेखाओं के प्रभाव से सौन्दर्य का अप्रतिम बोध कराता है। आपकी कृतियाँ भारतीयता के रंग में सरोबार अनगिनत भावनाओं की पुंज हैं, जिसमें प्रत्येक भाव आपकी कलात्मक दक्षता से मानों साकार हो उठा है, जिसे समझने के लिये एक मर्मस्पर्शी ह्रदय की आवश्यकता है। अल्मेकर सच्चे अर्थों में कलाकार थे। उनका कहना था, 'कलाकार को सदैव प्रसन्नचित रहकर संसार के सब दुखों को सहने की शक्ति होनी चाहिए। ऐसा किये बिना उसकी कला का जीवित रहना एवं विकसित होना असम्भव है। यदि कलाकार के जीवन में असंतोष हो तो इसका प्रभाव उसकी कला पर पड़ना अनिवार्य है। फलतः उसकी कला विकृत एवं संकुचित हो जाती है।

निष्कर्ष

श्री आल्मेलकर अपनी कृतियों के माध्यम से सदैव भारतीयता से जुड़े रहे, उस समय जब एक ओर कला प्रोगेसिव आर्टिस ग्रुप के कलाकारों के अभिनव प्रयोगों की देख रही थी वहीं एक ओर कलाकारों का वह वर्ग भी था जो परम्परावादी कार्यशैली को अपनी सृजनशीलता से आलोकित कर रहा था श्री आल्मेलकर उन्हीं में से एक थे। श्री आल्मेल्कर को कला जगत के अनेक सम्माननीय पुरस्कार प्राप्त हैं, बोम्बे आर्ट सोसायटी का गवर्नरस प्राइज, 1948, गोल्डमेडल, 1954, आर्ट सोसायटी इण्डिया की ट्राफी, 1955, राष्ट्रीय पुरस्कार, 1960 इत्यादि कुल मिलाकर लगभग 20 स्वर्ण पदक एवं 24 रजत पदक आपके नाम हैं। आपने सच्ची कला लगन से देश की गौरवमयी कला निधि में अपना सहयोग दिया जो अविस्मरणीय रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *A Forgotten Master's Oeuvre, article by Jayanti Madhukar, Times of India, feb,12, 2017*
2. *Strongly Traditional, article by Firoz Rozindar, The Hindu, may12, 2016*
3. *A.A. Almelkar, Inspiration and Impact, article by Giridhar Khasnis, Deccan Herald, march 19, 2017*
4. *A.A. Almelkar, Profile, article by Sahydri Lalit Kala Pratishthan,Pune, 2014*
5. *भारतीय चित्रकला, वाचस्पति गैरोला, इलाहबाद, 1963*
6. *मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार, राजेन्द्र वाजपेयी, 1983*